रविवार, दिनाँक 02-06-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

तेरा रूप इलाही सोहणिया सच्ची सरकार जी,

तेरे हत्थ विच डोर साजन जी सारे संसार दी।

इस संदर्भ में सजनों हर सजन का अपने प्रति कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने शेष जीवन की जो घड़ियाँ हैं, वह आत्मोद्धार के निमित्त लगाना सुनिश्चित करें। जानो इस प्रकार अपने ख्याल को बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बनाने पर आपको सहज ही आत्म-दर्शन हो जाएगा। जब इलाही आत्म-दर्शन दृष्टिगत हो गया, तो कुल संसार में सर्व-व्यापक भगवान का दर्शन हो जाएगा। तब जाकर एकता और सजनता का भाव मन में उत्पन्न होगा और एक अवस्था पनपेगी। इस विषय में ज्ञात हो कि जब तक मन में सजनता और एकता का भाव उत्पन्न नहीं होता तब तक मन-मस्तिष्क शान्त नहीं रह पाता। मन-मस्तिष्क शान्त नहीं होता तो एक-अवस्था में स्थिरता से बने रहना नामुमकिन हो जाता है जो कि अपने आप में विवेकशक्ति खोने की बात होती है। ऐसे इंसान को देखकर स्पष्टतया लगता है कि इसको सत्य और झूठ की पहचान नहीं है यानि यह बुद्धिहीन इंसान है। अब बुद्धिहीन तो किसी के भी अधीन हो जाता है। इसी अधीनता के कारण उसे जीवन में आने वाला दुःख-सुख, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी खलती है और मन में दुर्भाव पैदा हो जाता है। इन्हीं दुर्भावों से उसका चारित्रिक स्वरूप बिगड़ जाता है और वह मानव धर्म के विपरीत व्यवहार करता हुआ, पाप-कर्मों में उलझ जाता है। पाप-कर्मों में उलझने के बाद, उसे उन्हीं में बने रहने में मज़ा आने लगता है जिससे स्पष्टतया यह सन्देश मिलता है कि अमुक इंसान इन्द्रियरस में फँस गया है। अब सजनों कहाँ तो हमने सात्विक गुणों को धारण कर जितेन्द्रिय बनना था और कहाँ हम इन्द्रियरस में फँस राजसिक व तामसिक प्रवृत्तियों के गुलाम बन जाते हैं। यह सजनों ख़्याल का मनुराज में गोते खाने की बात होती है। ऐसा इन्सान मँझदार में गोते खाते हुए कभी जीता है तो कभी मरता है, कभी अच्छा सोचता है तो कभी बुरा सोचता है यानि संकल्प-विकल्प की तरंगें उसके मन में उठती रहती हैं जिसके तहत् तथ्य की स्पष्टता लेना नामुमकिन हो जाता है क्योंकि उसके अन्दर एक विचित्र प्रकार की उलझन पैदा हो जाती है। अन्य शब्दों में कहें तो वह व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है यानि उसे

पता ही नहीं रहता कि मैं यह करूँ या वह करुँ क्योंकि उसकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं रहती। सजनों जानो जिसकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं होती, उसके साथ कोई भी चतुर स्वार्थी इन्सान नकारात्मक खेल खेल जाता है और उसे अपने अधीन कर लेता है। फिर अधीनता में बने रहना ही उसकी आदत बन जाती है। इस सन्दर्भ में सजनों आज का इंसान इसी आदत से मजबूर हुआ पड़ा है तभी तो स्वतन्त्र रूप से जीवन जीना नहीं सीख पा रहा।

ज्ञात हो कि स्वतन्त्र रूप से जीना निर्विकारितापूर्वक यथार्थ जीवन जीने की बात होती है। ऐसा इंसान ही वर्तमान जीवन में सन्तोषी और धीर बने रह, परोपकार कमा सकता है। सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते, ऐसा जीवन जीने हेतु, हर इन्सान को चाहिये कि वह उनके वचनानुसार जीवन जीना आरम्भ कर दे। ज्ञात हो कि यह एक सुनहरी मौका है जिसका आप भरपूर लाभ उठा सकते हो। अतः जीवन बनाने हेतु, वचनों की पालना करो और सबके साथ-साथ अपने आप को भी नेक इंसान बनने के लिए प्रेरित करो। यह क्रिया अपने परिवार से आरम्भ करो। इसीलिए आपको कहा गया था कि परमार्थ की चर्चा घर-परिवार में आरम्भ कर दो। आज हम पुनः आपको सुचेती में लाने हेतु कह रहे हैं कि परमार्थ की चर्चा परिवार सहित करना शुरु कर दो ताकि परिवार के हर छोटे-बड़े सजन को पता लगे कि कामुकता का, क्रोध का, लोभ-मोह का, अहंकार का भाव कितना नुक्सानदायक होता है जो कि न केवल इन्सान की मानसिकता को अपितु सम्बन्धों से भी तोड़ कर रख देता है। इसके विपरीत निष्काम भाव जोड़ता है। सजनों इसी भान्ति धीरता-अधीरता का भी चलता है। अतः आज दृढ़-संकल्पी होकर और सजन श्री शहनशाह महाबीर जी को वचन देकर, इस कार्य का शुभारम्भ इस प्रकार से करो कि आपके घर-परिवार में बदलाव देखकर आपके पड़ौसी व सामाजिक सदस्य भी स्वार्थी बातें करना छोड़कर, परमार्थ में समय लगाना आरम्भ कर दें। अब कमज़ोर मत पड़ना। आप ऐसा करने में सक्षम हों और अन्यों को भी सक्षम बना सको, उसके लिये ध्यान-कक्ष में आज 'विवेक' के विषय में बताया जायेगा। सजनों आप भी विवेकशील बनकर 'काम' पर फ़तह पा लो। इसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी दुर्भावों की ऊँच-नीच और सन्तोष-धैर्य जैसे भावों के लाभ के प्रति भी आपको ध्यान-कक्ष में आगामी सप्ताह से बताया जायेगा। इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि यह सब कुछ क्रमशः ध्यान कक्ष से जैसे ही चलेगा, उसकी आप ने अपने परिवारों में चर्चा करनी है। याद रखो यदि आप निरन्तर ध्यान-कक्ष की क्लास में आकर, उसे भली-भान्ति समझकर, परिवारों के सजन बनने का पुरुषार्थ

दिखाते हो तो कोई कारण नहीं बनता कि आपका परिवार एकता में न आये या आपका परिवार चरित्रता का यानि मानवता का स्वरूप न बने। यह सर्व-उद्धार की बात है और इसी के साथ ही आपका सुधार और उद्धार जुड़ा हुआ है। यह बहुमूल्य बात है। सजनों यदि आप इस क्रिया में निरन्तर बने रहे तो आपका जीवन अमोलक हो जायेगा। तभी अन्य आपका उदाहरण देकर कहेंगे कि यथार्थतापूर्ण जीवन जीने का तरीका तो इस सजन से सीखो। सजनों यह यश-कीर्ति को प्राप्त होने की बात है। अतः आपने यह बात हर सजन को, चाहे वह सत्संगी हो, चाहे बाहर के हों, बतानी है। सजनों यह बताने की युक्ति परिस्थिति के अनुसार बतानी है ताकि सुनने वाले के अन्दर दिलचस्पी पैदा हो। अब आप सब मिलकर भजन बोलोः-

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

संसार सागर तों महाबीर जी लंघावन, नाम दा कवच पहना।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत बढ़ावीं, रघुनाथ जी नू देसन मिला।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सांवली सूरत नाल प्रेम बढ़ावीं, पंजां नू देवन भजा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सारी उमर दुःखां विच गुजारी, हुन रघुनाथ जी दे दर्शन पा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

विषयां विच न उमर गवावीं, प्रीति हरि चरणां विच ला।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

नाम महाबीर जी दा हृदय विच ध्यावीं, चरण रघुनाथ जी दे देसन दिखा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

कंडयां दे रस्ते मूल न जावीं, उमर रघुनाथ जी दे चरणां विच बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

अंध कूप विचों बली जी कढेसन, हर श्वास नाम ध्या।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

वाशना नू तुसी परे हटाओ, अन्धेरा देसन हटा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

कई सूरजां दा सूरज तू पावें, सारी उमर आनन्द दी बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

मैं दासी सुरति सुरति पुकारां, हरदम चरणां विच जा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सजनों इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी अपने ख़्याल को आवाहन दे रहे हैं कि हे सुरति ! इधर-उधर भटकने के स्थान पर यानि कभी इसको तो कभी उसको सोचने के स्थान पर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मार्ग-दर्शन को स्वीकार कर। इस तरह उनके जीवन-उद्धारक विचारों के प्रति समर्पित हो, तमाम संकल्प-विकल्पों से मुक्त हो जा और अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा। फिर वह कहते हैं कि केवल यही विचार निरन्तरता पकड़े, उसके लिये अपने हृदय को विशुद्ध रख और इस हेतु उन द्वारा प्रदत्त नाम चला।

सजनों यह नाम-अक्षर की युक्ति तो हम सबको मिली हुई है पर फिर भी हम मननकार क्यों नहीं होते? विचारो कि यहाँ किसके वचनों की पालना करने की बात हो रही है? - यह तो जो हमारी आत्मा में परमात्मा है, उसके वचनों की पालना करने की बात हो रही है।

अब यदि इस सत्य को स्वीकारते हो कि 'आत्मा में परमात्मा' है तो परमात्मा के वचनों की पालना न करना कहाँ की समझदारी है? ऐसा करना किसका निरादर करने की बात है? एक तरफ तो आप राम, राम, राम जपते हो और दूसरी तरफ उनके वचनों की पालना न करके उनका निरादर करते हो। सोचो कि यह निरादरी आपको कितनी भारी पड़ रही है। इस कारण आपका कितना निरादर हो रहा है? आशय यह है कि जब आप परमात्मा के वचनों की निरादरता के स्वभाव में ढलकर, घर-परिवार व समाज में विचरते हो तो कोई भी आपको आदर की दृष्टि से कैसे देख सकता है। इसी कारण आपको हर क्षण निरादरी का सामना करते हुए परेशान व हताश हो दुःखों में रहना पड़ता है। आज अधिकतर हर इंसान के साथ ऐसा हो रहा है और अब तो आप इतने कमज़ोर हो गये हो कि परम पुरुषार्थ द्वारा धर्म-पथ पर चलना आपको दुष्कर प्रतीत हो रहा है। पर यह गलत है क्योंकि इस भजन में कहा गया है कि धर्म पर चलना अधर्म न करना। तो इस पर आपने घर में बैठकर विचार-विमर्श करते हुए चर्चा करनी है ताकि आपको धर्म-पथ पर चलने के लाभ व इसके विपरीत अधर्म पथ पर चलने की हानि गहराई से समझ आ सके यानि आपको ज्ञात हो जाये कि धर्म पर चलने से मेरा व मेरे परिवार का कैसे कल्याण हो सकता है और अधर्म पर चलने से कैसे नुक्सान हो सकता है? सजनों यह क्रिया परिवार को स्वार्थी धन के साथ-साथ परमार्थी धन प्रदान कर स्वाभाविक रूप से सम्पन्न बनाने की बात है ताकि सब मानवता के प्रतीक बन जायें। अब आपको निश्चित रूप से घरों में चर्चा करनी है और फिर जानना है कि धर्म पर चलने की युक्ति कहाँ से प्राप्त हो सकती है? इस तरह सजनों आप अपनी जाँचना भी कर सकते हो कि आप कैसा धर्मयुक्त या अधर्मयुक्त जीवन जी रहे हो? इस संदर्भ में जिसको तो अपना मूल्यांकन कर यह लगे कि मैं अपने जीवन में निरन्तर सत्य मार्ग पर निष्काम भाव से अग्रसर हो रहा हूँ तो समझ लेना कि वह धर्मपरायण जीवन जी रहे है। इसके विपरीत यदि लगे कि मन में कोई कामना है, स्वार्थपरता है तो समझ लेना कि मैं अधर्मयुक्त जीवन जी रहा हूँ और इसके परिणाम स्वरूप मेरा विनाश को प्राप्त होना निश्चित है। यहाँ यह भी जान लो कि आप अपने और अपनों के विनाश का हेतु क्यों बन रहे हो? - निश्चित रूप से केवल और केवल आत्मिकज्ञान के अभाव के कारण। बार-बार यह बताने, समझाने और धमकाने के

बावजूद भी कि अब तो सम्भल जा और सम्भलकर अपना व अपने परिवार का सजन बन, धर्म के रास्ते चढ़ जा, आप विचार में नहीं आ रहे। इस सन्दर्भ में धर्म को पहचानने हेतु अपनी विवेकशक्ति जाग्रत करो क्योंकि शास्त्र कह रहा है:-

संम्भल संम्भल के चल वे, इस जग रहना नहियों।

बन्दे बात चलन वाली करवे, इस जग रहना नहियों।।

इत्थे रहना नहियों, इत्थे बहणा नहियों।

इत्थे रहना नहियों इक पल वे, इस जग रहना नहियों।।

अतः सजनों आत्मोद्धार करने के प्रति पुरुषार्थ करो ताकि आप अमरता के प्रतीक बन नश्वरता के जीवन से छुटकारा पा लो। इस संदर्भ में आपने आज विचारना है और साथ ही अपने जीवन का परिणाम खुद ले लेना है कि क्या अपने बच्चों से सच्चा प्यार करते हो या झूठा स्वार्थपर प्यार करते हो? जानो अगर तो आप उनको परमार्थ नहीं सिखाते तो आपका प्यार उनके प्रति झूठा है। अब जब आपका प्यार ही झूठा है तो वह आपको सच्चा प्यार कैसे करेंगे क्योंकि जैसी करनी वैसी ही भरनी। जो स्वभाव उनको दोगे, वही स्वभाव वह आपको पलटकर देंगे। तो अपने दुःखों का दोषी कौन हुआ? - स्वयं आप। सजनों इस बात को समझो और समझाओ और आध्यात्मिक क्रांति की एक लहर सी चला दो ताकि हर परिवार इस आध्यात्मिक क्रान्ति के अन्तर्गत आ परम सुख को पा जाये। इस संदर्भ में आप सब जानते ही हो कि यह लहर संगीत कला केन्द्र द्वारा हर शहर में चल रही है। स्कूलों के बच्चों को, शिक्षकों को इस ग्रन्थ की विचारधारा से परिचित कराया जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि इस क्षेत्र में संगीत कला केन्द्र बहुत अच्छे से व लगन से काम कर रहा है। इस तरह संगीत कला केन्द्र द्वारा समाज सुधार के हेतु प्रयास हो रहा है। ऐसे में आपके लिए बनता है कि आप भी अपने बच्चों को व उनके संगी-साथियों को उन कला केन्द्रों के साथ जोड़ो। ऐसा करने से आपके बच्चों के साथ-साथ सबका सुधार होगा। अतैव सजनों मानो कि आत्मोद्धार हेतु इस द्वारे से आपको हर प्रकार की सहूलियत प्राप्त हो सकती है और हो भी रही है। पर उसका लाभ उठाना तो आपका ही काम है। अब क्या-क्या सुविधा प्राप्त हो रही है वह एक-दो सप्ताह में हम लिखकर भी दे देंगे। फिर भी अगर आप उसका लाभ नहीं उठाते तो आपका कोई ईलाज नहीं है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों होश में आओ और सत्य को धारणकर निष्काम हो जाओ। सत्य को धारण करने हेतु सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का मनन-चिंतन करो। याद रखो इस हेतु सकारात्मक प्रयास तो करना ही पड़ेगा। अब ग्राम शिक्षा केन्द्र के बच्चों को देखो, कि इनको कैसे परमार्थ का ज्ञान दिया जा रहा हैः-

ठान लिया तो रुकना क्या

हम आगे बढ़ेंगे हम आगे बढ़ेंगे

और आगे बढ़ कर

श्रेष्ठ मानव बन जाएंगे

भौतिक ज्ञान के संग संग

आत्मिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे

जो शब्द विचार निहित हैं उसमें

उनको धारण कर नेक बनेंगे

ए विध् जो अंधकार है मन में

वह स्वतः ही मिट जाएगा

सद्ज्ञान की वर्षा होने पर

मन का मैल धुल जाएगा

फिर न कोई विषय रहेगा

जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करेंगी

तो ही तो भोग विलास की पीड़ा

हमें नहीं सहनी पड़ेगी

तभी तो दोष मुक्त हम रहकर

विकार रहित रह पाएंगे

निर्विकारी नाम कहा कर

जीवन सफल बनाएंगे

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

यह सब सुनने के पश्चात आप सबको ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि के स्कूल की महत्ता और महत्त्व समझ आ गया होगा। अब जो सजन स्वार्थ को प्राथमिकता देते हुए, समभाव-समदृष्टि के स्कूल में लगने वाली क्लासें, जिन द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता है, अटैण्ड करने से या उन क्लासों में जाने से सकुचाते हैं व इधर-उधर भाग जाते हैं, उनको सुझाव है कि वे क्लासों में आकर हर परमार्थी विषय को अच्छे से समझें और आरामपरस्ती और भौतिक मस्ती दोनों में उलझकर इस पढ़ाई में समय देने से न सकुचाएँ। जानो जो ऐसा नहीं करेगें वह समझ लें कि वह अपना नुक्सान आप ही करने पर तुले हुए हैं। आशय यह है कि जब आत्म-सुधार के लिये समय ही नहीं लगाओगे यानि ज्ञान को धारण ही नहीं करोगे तो कैसे स्वार्थपरता छोड़ परमार्थ बन पाओगे। याद रखो ऐसे सजनों को अन्त समय, जब सब कुछ बर्बाद हो जाएगा, पछताना पड़ेगा। कहा भी जाता है न कि अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। यहाँ चिड़ियाँ चुग गई खेत का मतलब है कि जब आत्मज्ञान का अभाव हो गया यानि आत्मज्ञान प्राप्त करने के प्रति दिलचस्पी हट गई और इस संसार के विषय-विकारों में आसक्ति हो गई तो परेशानियों, दुःखों व ठोकरों के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगेगा।

सजनों जानो कि वह इन्सान जिसको अपनी ही पहचान न हो जगत की किसी वस्तु को भी नहीं पहचान सकता क्योंकि उसे तो अपनी ही पहचान नहीं होती। ऐसा सजन कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, बुद्धिहीन ही होता है। हमें समझ नहीं आती कि क्यों कर हम सजन, जो अभय कुदरती ज्ञान शास्त्र में लिखा हुआ, ज्ञान है व जिसका प्रवाह निरन्तर हर दिन

चल रहा है, जीवन व्यवहार के दौरान उसका इस्तेमाल करते? याद रखो सजनों इस कुदरती ज्ञान को प्राप्त करने का साधन व युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हमें बख़्शी हुई है। हमारे लिये बनता है कि उस ज्ञान का इस्तेमाल कर हम आत्म-निर्भर बने व आत्मज्ञानी नाम कहाएँ। अतः समझदार बनो और जो भी सुविधा सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से प्राप्त है, हर सुविधा का सही ढँग से इस्तेमाल करो व अन्य लोगों तक भी उसे पहुँचाकर परोपकार कमाओ। यही होता है अपना सजन और सबका सजन बनना। वर्ना तो मनमुख बन अपना व सबका वैरी बनने की बात होती है। आपकी हालत देख कर हमें दुःख होता है कि क्योंकर आप सब कुछ पास होते हुए भी, अपने ख़्याल को ज्ञानेन्द्रियों से ऊपर उठाने में असक्षम हो। सजनों जानो इसके लिये अभ्यास की परम आवश्यकता है। इस हेतु आपको निरन्तर सत्संग में आना होगा। हम देखते हैं कि कई नजदीक जैसे फ़रीदाबाद, गुड़गाँव, दिल्ली व रेवाड़ी रहने वाले सजन भी, यदा-कदा ही नज़र आते हैं। ऐसे सजन जो अपने ही वैरी होते हैं, वह भला दूसरों के सजन कैसे बन सकते हैं? अगर उन्हें आने की कोई सुविधा चाहिये तो हमारे से मिलकर बात करें तो इनका आपस में ही प्रबन्ध हो जायेगा। हम इनको तरीका भी बतायेंगे और उचित प्रबन्ध भी कर देंगे। तब कोई बहाना नहीं रहेगा। जहाँ भी आप कमज़ोर पड़ते हो, आकर स्पष्ट बात करो और समाधान ले लो। इस संदर्भ में जिस शहर वाले को भी कठिनाई हो वे सजन २९ तथा ३० जून को आ सकते हैं। यहाँ सुनिश्चित यह करना होगा कि वे पूरे के पूरे सजन उस दिन आयें। उदाहरणार्थ अगर फरीदाबाद है तो वहाँ के सभी सजन आयें, कोई रहे न। इसी प्रकार गुड़गाँव है, दिल्ली है, वहाँ का भी कोई सजन न रहे। उस दिन परस्पर विचार-विमर्श होगा। तो सबकी आने-जाने की असुविधा का हल भी हो जायेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ जय सीताराम जी।